भूमिका

मानव सभ्यता के इतिहास में मनुष्य का 'कृषक' होना उसके पशु आचरण से पृथक होने की पहली घटना है। इसके पूर्व अग्नि तथा पहिए आदि के उल्लेखनीय आविष्कार होने के बावजूद आदिमानव अभी तक पाषाणयुगीन जीवन जी रहे थे। कृषि के ज्ञान ने उन्हें स्थायित्व प्रदान किया। यह स्थायित्व ही आगे चलकर विभिन्न सभ्यताओं की निर्मिति का कारण बना। सामान्य शब्दों मे कहें तो हमारी सभ्यता का मूलाधार कृषि ही है।

एक लंबे समय तक कृषि कार्य मनुष्य के जीवन का केंद्र रहा। युगानुरूप क्रमश: सभ्य होते मनुष्य ने अपनी जीविका और रोजगार हेतु नए-नए संसाधनों और उत्पादन के साधनों का प्रयोग करना शुरू किया। धनार्जन के लिए नए-नए यंत्र विकसित किए गए। यहीं से कृषि और कृषक दोनों धीरे धीरे हाशिये पर खिसकने लगे। अपने अस्तित्व रक्षा के लिए किसान भी एकत्रित एवं संगठित हुए। फलस्वरूप सोलहवीं शताब्दी में किसानों का प्रथम सशस्त्र विद्रोह विश्व इतिहास का एक अध्याय बना। यह दूसरी बात है कि जमींदार वर्ग ने इसे दबा दिया। कालांतर में उद्योग आए, मशीनें आईं, तकनीकें आईं, व्यापार शुरू हुआ और धन कमाने के नए-नए तरीके भी। मशीनों के आने से कृषि का भी स्वरूप बदला, और यह धीरे-धीरे कच्चे माल के एक स्रोत में परिवर्तित होती गई। कच्चे माल के स्रोत से तात्पर्य यहाँ कम मुनाफे वाले क्षेत्र से है। पूंजी ने कारखानों, उद्योगों के जरिये अपना विस्तार करना शुरू किया। सामंती व्यवस्था के विध्वंस, मध्यम वर्ग के उदय ने उपभोग क्षेत्र का विस्तार किया। द्वितीयक (पक्का माल) तथा तृतीयक (वितरण) सेवाओं की ओर पूंजी के रुख ने प्राथमिक क्षेत्र (कृषि) को पीछे धकेलना शुरू कर दिया। परिणाम स्वरूप कृषि क्षेत्र की बदहाली प्रारम्भ होने लगी। रही सही कसर पूरी की भूमंडलीकरण ने जिसने बाजार को अंतिम आदमी तक पहुंचा दिया। सेवाओं के इतने सरल और 'स्मार्ट' रास्ते खुलने शुरू हुए कि धन कमाने के इच्छुकों ने कठिनाई से भरी कृषि को त्यागना ही बेहतर समझा। भारतीय कृषि व्यवसाय उपर्युक्त स्थिति से भिन्न नहीं है। वर्तमान में कृषि पर जो समस्याएँ आन पड़ी हैं, भविष्य में उनका निराकरण होना मुश्किल हो रहा है। सरकारी तंत्र, नीतियाँ, लालफीताशाही, मौसम, महंगाई की मार झेलता कृषि व्यवसाय अत्यंत दयनीय स्थिति में है। कृषि आत्महत्या का ग्राफ़ साल दर साल

ऊपर बढ़े जा रहा है। ऐसे में साहित्य इस मुद्दे को कितना स्थान दे पाया है ? हिन्दी के 'फाँस' तथा पंजाबी के 'अन्नदाता' उपन्यास के माध्यम से यही देखने का प्रयास किया जाएगा।

'अन्नदाता' उपन्यास पंजाब के किसानों के जीवन की त्रासदिक पहलुओं पर प्रकाश डालता है। पिछले सालों में किसानों की जमीन का धीरे–धीरे विभाजन होता गया है, बेरोजगारी बढ़ती गई है। किसानी लगातार कम होती जा रही है। अच्छे खाते पीते सम्पन्न घरों की दुर्दशा हो रही है। इस उपन्यास में मंडीकरण, शहरीकरण के द्वारा किसानी की गिरती हालत को दिखाया गया है। ये संकट पूंजीवादी व्यवस्था के कारण पैदा हुए हैं। उपन्यास के सजीव पात्र ग्रामीण जीवन की जीती जागती झलक हैं। पंजाब में आंतकवादी लहर से जीवन बदतर व कष्टमयी बनता गया है। ऐसी स्थिति में बहुत सारे किसान निराशा के गहरे आलम में डूब गए हैं। कुछ किसान अपनी दयनीय जीवन स्थिति को अपनी नियति मानने लगे हैं और पाखंडी साधुओं के पिछलग्गू बन गये हैं। बहुत सारे किसान व उनकी युवा औलाद नशीले पदार्थों के गहरे समुन्दर में गर्क होने लगी हैं। जो किसान अपनी जमीन के बल पर गांव में चौधरी कहलाता था, आज दिहाड़ीदार बनकर बाजार में अपनी बोली लगवा रहा है। ऐसे ही किसानी जीवन व जीवन यथार्थ के तमाम पहलुओं पर 'बलदेव सिंह' ने इस उपन्यास में विस्तार से प्रकाश डाला है।

हिन्दी-मराठी की सन्धि पर खड़ा 'संजीव' का नवीनतम उपन्यास 'फाँस', संभवत: हिंदी भाषा में अपनी तरह का पहला उपन्यास है। इसके केन्द्र में 'विदर्भ' और समूचे देश में तीन लाख से ज्यादा हो चुकी किसानों की आत्महत्याएँ और 80 लाख से ज्यादा कृषि छोड़ चुके भारतीय किसान हैं। ये वे किसान हैं जो आजादी के 68 साल बाद भी शोषण के शिकार हैं। यह उपन्यास भारतीय शासन और सत्ता के छद्म को भी उजागर करता हैं। कथाकार ने अपनी यथार्थवादी दृष्टि से इन समस्याओं को पाठकों के सामने रखा है। किसानों की दशा दिन प्रतिदिन कितनी दयनीय होती जा रही है, इस पर कथाकार ने अपनी संवेदना व्यक्त की है।

इस लघु शोध प्रबंध **"फाँस' तथा 'अन्नदाता' में किसान जीवन"** में इसी प्रकार के किसानी जीवन को चित्रित कर उसका विवेचन विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त इस शोध प्रबंध को तीन अध्यायों मे विभाजित किया गया है।

अध्याय -1 **किसान आंदोलन : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।**

अध्याय -2 **'पंजाब' तथा 'मराठी' समाज में किसान जीवन।**

अध्याय -3 **'फाँस' तथा 'अन्नदाता' में किसान जीवन: तुलनात्मक अध्ययन**

पहले अध्याय **'किसान आंदोलन: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि'** मे किसानी के स्वरूप को समझाने का प्रयास किया गया है। इसमे दो उप-अध्याय हैं। पहले उपध्याय में भारत में स्वतन्त्रता से पहले तथा स्वतन्त्रता के बाद की किसानों की स्थिति को दिखाते हुए उस समय के प्रमुख किसान आंदोलनों का उल्लेख किया गया है। दूसरे उप-अध्याय में नौवे दशक यानी भूमंडलीकरण के बाद से वर्तमान तक किसानों की स्थिति में आए परिवर्तन को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

दूसरे अध्याय **'पंजाब' तथा 'मराठी' समाज में किसान जीवन'** को दो उप-अध्याय में विभाजित किया गया है। जिसमे प्रथम उप-अध्याय में पंजाब के किसानों के पुराने समय की संपन्नता तथा वर्तमान समय में किसानो की दयनीय स्थिति को दिखाया गया है। दूसरे उप-अध्याय में मराठी समाज में किसान की वर्तमान में गिरती हालत को दिखाया गया है।

तीसरे अध्याय **'फाँस' तथा 'अन्नदाता' में किसान जीवन :तुलनात्मक अध्ययन** को दो उप-अध्यायों में बांटा गया है जिसमें प्रथम उप-अध्याय में दोनों अपन्यासों के किसान जीवन के भिन्न- भिन्न रूप को दिखाया गया है। दूसरे उप-अध्याय में दोनों उपन्यासों मे किसान जीवन की आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तीनों अध्यायों की समाप्ति के बाद शोध का उपसंहार प्रस्तुत किया गया है। इसमें शोध विषय की संक्षिप्त व्याख्या एवं सम्पूर्ण अध्ययन के फलस्वरूप उपलब्ध निष्कर्षो को प्रस्तुत किया गया है।

लघु शोध प्रबन्ध में आधार सामग्री के रूप में 'फाँस', संजीव, वाणी प्रकाशन, 2015 तथा 'अन्नदाता', 'बलदेव सिंह', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,2010 का उपयोग किया गया है। प्रबंध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है, जिसमें इस कार्य में प्रयुक्त एवं चुनी हुई अन्य सामग्रियों का उल्लेख किया है। शोध कार्य के लिए शोध प्रविधि के रूप में मुख्यत: तुलनात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक, एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

आभार

प्रस्तुत शोध प्रबंध मेरे अकेले की मेहनत का परिणाम नहीं है, मैं इस यात्रा में शामिल उन सभी लोगों की आभारी हूँ, जिनसे मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायता मिली। सर्वप्रथम मैं विभागाध्यक्ष तथा अपने शोध निर्देशक प्रो॰ सूरज पालीवाल जी का, जिन्होंने विषय चयन मे मुझे सहायता प्रदान की तथा अपनी व्यस्तता के बावजूद समय समय पर मेरा मार्गदर्शन करते रहे, आभार व्यक्त करती हूँ। आपने मुझे न सिर्फ सैद्धांतिक रूप से शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया बल्कि मेरी व्यावहारिक समस्याओं को भी समझते हुए हमेशा मेरा सहयोग किया। मेरे शोध कार्य के दौरान आने वाली कई समस्याओं को जिन्होनें बड़ी ही आत्मीयता के साथ दूर करके शोध कार्य को सम्पन्न करने मे मेरी मदद की। साथ ही साहित्य विभाग के सभी गुरुजनों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होने शोध कार्य को पूरा करने में समय समय पर मुझे सहायता प्रदान की।

इस लघु शोध कार्य को पूर्ण करने में प्रथम गुरु अर्थात मेरे माता-पिता का सहयोग सर्वोच्च रहा है, जिनके प्रति प्रणाम निवेदन करते हुए यह प्रबंध उन्हीं को समर्पित करती हूँ। अपने परिवार के सभी सदस्यों, मम्मी, डैडी जी (सास,ससुर) जिन्होंने मुझे अपनी पढ़ाई जारी रखने मे मदद की, सभी भाई बहनों के साथ साथ अपनी दीदी मंजु के प्रति कृतज्ञ आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिनके बिना ये शोध कार्य असंभव था। अपने सभी मित्रों का भी आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, जिन्होंने समय समय पर मेरी सहायता की। विशेष रूप से ध्रुव कुमार त्रिपाठी, जो कमजोर होते क्षणों मे मुझे आत्मबल प्रदान करते हुए मेरे शोधकार्य में अंतिम समय तक बराबर के भागीदार बनकर मेरी सहायता करते रहे।

अपने विभाग के सभी गैर-शैक्षणिक पदाधिकारियों का भी आभार व्यक्त करती हूँ। साथ ही इस विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, शोध में प्रयुक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाएँ, यहाँ तक कि इंटरनेट का भी विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिनसे मुझे सामग्री के साथ-साथ आवश्यक दृष्टि भी मिली।

लघु शोध प्रबंध के दौरान मैंने जिन विद्वानों की सामग्री का प्रयोग किया उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। अंत मे अपने पति एवं सहचर पंकज सिंह का आभार व्यक्त करना चाहूंगी, जिनके लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं। मैं बस यही कहूँगी कि शोध कार्य के हर पल, हर क्षण में वे मेरे साथ रहे। यह शोध कार्य मेरे साथ-साथ उनकी भी मेहनत और निष्ठा का परिणाम है।